कमल की बेटी

(१)

रात्रि का समय था, चन्द्रमा की धवल किरणें पृथ्वी को अपनी शीतल चाँदनी में स्नान करा रही थीं। श्रीकृष्ण ने ठण्डी साँस भरी और कहा, "मेरा विचार झूठा निकला। मनुष्य संसार का सर्वोत्तम पदार्थ नहीं। कमल का यह फूल जो वायु के झोंकों के साथ क्रीड़ा कर रहा है, उससे कहीं अधिक मनोहर और दृष्टि को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला है। उसकी पँखड़ियाँ कैसी सुन्दर हैं, उसका रङ्ग कैसा मनोहारी है, उसका रूप कैसा अनुपम और नयनाभिराम है। सौन्दर्य्य के बाज़ार में यह निर्जीव पुष्प सकल संसार की सबसे अधिक रूपवती कामिनी को परास्त कर सकता है। प्रत्युत यदि जगत् का सम्पूर्ण सौन्दर्य्य एक स्थान पर एकत्र कर दिया जाय, तब भी उसमें यह मोहनी नहीं आ सकती, जो इस अकेले फूल के अन्दर समाई हुई है। मैं चाहता हूँ कि इस प्रकार की एक लड़की उत्पन्न करूँ, जो मनुष्यों में ऐसी हो, जैसे फूलों में कमल। जिससे संसार के अँधेरे कोण जगमगा उठें, और जिसके सम्मुख श्यामा का सङ्गीत भी मन्द पड़ जाय।"

यह सोचकर श्रीकृष्ण कुछ क्षण चुप रहे, और फिर एकाएक अपनी साँवरी अँगुली उठाकर बोले:—"ले कमल के निर्जीव पुष्प! एक सजीव सुन्दरी के रूप में बदल जा, और मेरे सामने खड़ा हो।"

जल की लहरों ने अपने आपको सरोवर के तटों के साथ टकराया। रात्रि अधिक सुन्दर हो गई। चन्द्रमा की किरणें अधिक प्रकाशमान हो गईं। सरोवर का जल मोतियों के समान चमकने लगा, मानो चन्द्रमा की चाँदनी उसमें हल हो गई। सोती हुई चिड़ियाँ अपने प्राणों की सम्पूर्ण शक्ति से गाने लगीं, और कुछ देर के बाद सहसा चुप हो गईं। कमल के फूल ने जल में डुबकी लगायी और एक लावण्यवती सुन्दरी अपने पँखड़ियों के सदृश कोमल वस्त्र निचोड़ती हुई बाहर निकली।

श्रीकृष्ण का हृदय प्रसन्नता से धड़क रहा था। उन्होंने कमल की बेटी को देखा और काँपती हुई आवाज़ में कहा:—"पहले तुम कमल का निर्जीव फूल थीं, अब तुम कमल की सजीव बेटी हो। बातें करो।"

कमलकुमारी ने सिर झुकाकर बोलना आरम्भ किया, वायु में सुगन्धि भर गई—"महाराज! मैं आपके आदेश से उत्पन्न हुई हूँ, आपकी आज्ञा पर चलूँगी। कृपया कहिए, मैं कहाँ निवास करूँ?"

श्रीकृष्ण ने चन्द्रमा का ओर टकटकी लगाकर देखा और उत्तर दिया—"पुष्पवाटिका में।"

"महाराज! वहाँ वायु फूलों को थपेड़े लगाती है।"

"क्या तुम पर्वतों की ऊँची चोटियाँ पसन्द करोगी?"

"वहाँ बर्फ़ है। शीत से मेरा हृदय काँपने लगेगा।"

"अच्छा! तो समुद्रतल में। वहाँ मैं तुम्हारे लिए मूँगे का महल बना दूँगा।"

"परन्तु वह बहुत गहरा है।"

श्रीकृष्ण ने मुस्कराकर पूछा—"तो फिर तुम्हें कहाँ रखें, क्या हिमालय की कन्दराओं में?"

कमल की बेटी का अङ्ग अङ्ग थर्रा गया। उसने काँपते हुए कहा:—"वहाँ अँधेरा है।"

"कमल के फूलों के पास, जल के ऊपर?"

"वहाँ काई है।"

"निर्जन वनों में?"

"वहाँ एकान्त है। इसमें मेरा रक्त नाड़ियों में जम जायगा।"

श्रीकृष्ण ने माथे पर हाथ फेरा। इस समय उनका चित्त बहुत उदास था। उन्होंने अपनी बाँसुरी निकाली, और उसे बजाने लगे।

(२)

रात्रि बीत गई। सूरज की किरणें जल पर नाचने लगीं। सरोवर का जल, ताड़ के पत्ते, वृक्षों पर रहने वाले पक्षी, निद्रा से जागे, मानो प्रकृति में नये सिरे से जान आ गई।

श्रीकृष्ण ने कहा, "वह कवि है।"

सरोवर के निर्मल जल पर एक लम्बी छाया दिखाई दी। वायु में किसी की मदभरी तान गूँजी। हरे हरे घास पर किसी के पाँवों की हल्की सी चाप सुनाई दी। और थोड़ी दूरी पर एक नवयुवक हाथ में वीणा लिये आता दिखाई दिया। श्रीकृष्ण ने उसे देखा, और फिर दुबारा कहा, "वह कवि है।"

कवि समीप आया—एक दूसरा सूरज उदय हो गया। उसने कमल की बेटी को देखा तो वीणा उसके हाथ से गिर गई और पाँव भूमि में गड़ गये, जैसे किसी ने उनमें बेड़ियाँ डाल दी हों। श्रीकृष्ण ने कमल के फूल को जीती-जागती लड़की बनाया था, लड़की के अनुपम लावण्य ने कवि को आश्चर्य की मूर्त्ति बना दिया।

श्रीकृष्ण ने पूछा—"कवि! क्या हाल है?"

कवि ने चौंककर वीणा सँभाली और सिर झुकाकर उत्तर दिया—"मैं प्रेम करता हूँ, प्रेम के पद बनाता हूँ, और प्रेम का सङ्गीत गाता हूँ...मेरे जीवन का एक एक क्षण प्रेम के लिए समर्पित हो चुका है।"

यह कहते कहते कवि ने कमल की बेटी की ओर प्यासे नेत्रों से देखा, और एक ठण्डी साँस भरी।

श्रीकृष्ण बैठे थे, खड़े हो गये और बोले, "सुन्दरी! मुझे तुम्हारे लिए स्थान मिल गया।"

"कहाँ?"

कवि का कलेजा धड़कने लगा, श्रीकृष्ण ने कहा "इस कवि के हृदय में जाकर रहो।"

कवि ने सिर झुका दिया। उसकी वीणा के तारों से झङ्कार का शब्द निकला। कमल की बेटी सौन्दर्य्य के कटाक्ष से आगे बढ़ी, और कवि के हृदय में प्रविष्ट होने लगी। परन्तु एकाएक पीछे हट गई। इस समय उसका मुख-मण्डल भय से हिम की नाईं सफ़ेद था। श्रीकृष्ण को आश्चर्य्य हुआ "क्या तुम वहाँ भी डरती हो ?"

(३)

कमल की बेटी की आँखों में आँसू लहराने लगे। उसने गद्‌गद् वाणी से कहा "महाराज ! आपने मेरे लिए कैसा स्थान चुना है। वहाँ तो गगनभेदी पर्वतों की हिम से पटी हुई ऊँची ऊँची चोटियाँ, भयानक तरङ्गवाले समुद्र की गहराइयाँ, शून्य वनों का सन्नाटा, और हिमालय की अँधेरी गुफाएँ, सब कुछ विद्यमान हैं। मैं वहाँ कैसे रहूँगी।"

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया:—"न डरो ! सुन्दरी न डरो। डरने का कोई कारण नहीं। तुम सुन्दरी हो, तुम्हारा आसन कवि का हृदय है। यदि वहाँ हिम है, तो तुम सूरज बनकर उसे पिघला दो। यदि वहाँ समुद्र की गहराई है तो तुम मोती बनकर उसे चमका दो। यदि वहाँ एकान्त है, तो मधुर सङ्गीत आरम्भ कर दो, सन्नाटा टूट जायगा। यदि वहाँ अँधेरा है, तो तुम दीपक बन जाओ, अँधेरा दूर हो जायगा।"

कमल की बेटी इनकार न कर सकी। वह अब तक वहीं रहती है*।

---

* पोलैंड के सुप्रसिद्ध गल्प-लेखक Henryk Sein kie Wicz की एक गल्प के आधार पर।